साईं आराधना

नित्य अर्चना एवं पूजन विधि

साईं आराधना - नित्य अर्चना एवं पूजन विधि

संकलन कर्ता

नन्देश्वर पाठक

नन्देश्वर पाठक

साईं आराधना

नित्य अर्चना एवं पूजन विधि

प्रस्तुत पुस्तिका में साईं बाबा के दैनिक पूजन-अर्चन के लिए स्तोत्र एवम भजन संकलित हैं। जो साईं भक्त या साधक, साईं बाबा की विधिवत एवं शास्त्र-सम्मत दैनिक पूजा और आराधना करना चाहते हैं, उनका मार्गदर्शन करने में यह पुस्तिका अत्यंत उपयोगी साबित होगी।

साईं धाम, नरैनापुर, बगहा-2, बिहार में स्थित बाबा के श्रीविग्रह की विधिवत पूजा के हेतु इन स्तोत्र एवम भजनों का संकलन साईं धाम के स्थापना के प्रेरणा स्रोत, पठकौली निवासी श्री नन्देश्वर पाठक द्वारा किया गया है। पिछले चालीस से भी अधिक वर्षों से बाबा की अनन्य सेवा मे संलग्न श्री नन्देश्वर पाठक ने समग्र भारत के अनेक साईं मंदिरों का भ्रमण किया है तथा अनेक साईं भक्तों को साईं-सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा दे रहे हैं।

ISBN 9789354068805
90000 >
9 789354 068805

साईं आराधना

नित्य अर्चना एवं पूजन विधि

संकलन कर्ता

नन्देश्वर पाठक

साईं आराधना: नित्य अर्चना एवं पूजन विधि

ISBN: 978-93-5406-880-5

सम्पादन एवं प्रकाशन: डॉ. प्रांशु समदर्शी, पठकौली, बगहा -2, पश्चिमी चम्पारण, बिहार – 845105

मुद्रक: www.pothi.com

अनंता तुला ते कसे रे स्तवावे।

अनंता तुला ते कसे रे नमावे।

अनंता मुखांचा शिणे शेष गाता।

नमस्कार साष्टांग श्री साईंनाथा।

- ***साई सगुणोपासना से***

आप अनंत हैं, मैं कैसे आपका स्तुतिगान करूँ।

आप अनंत हैं, मैं कैसे आपका नमन करूँ।

सहस्त्र मुख वाले शेषनाग भी आपकी महिमा का गान करने में असमर्थ हैं।

श्री साईंनाथ आपको साष्टांग नमस्कार है।

विषय -सूची

साईं-समर्पण

(प्रस्तावना)

शिरडी के साईं बाबा के प्रति आस्था और विश्वास पिछले कुछ दशकों में जिस रूप में सर्वव्यापी हो रही है, वह एक अभूतपूर्व घटना है। भारत के अनेक शहरों तथा सूदूरवर्ती क्षेत्रों में भी बाबा के मन्दिर निर्मित हो रहे हैं और श्रद्धालुओं की संख्या में आशातीत वृद्धि हुई है। इस बीच बाबा के निष्ठावान भक्त और मेरे अनुज श्री नन्देश्वर पाठक के सतप्रयासों से जब पश्चिम चम्पारण बिहार के बगहा-2 स्थित नरैनापुर के साईं धाम में जब बाबा के श्री विग्रह की स्थापना हुई तो बाबा की दैनंदिन पूजा एवं आराधना किस प्रकार हो इस विषय पर विचार किया गया। किसी मंदिर में प्राणप्रतिष्ठित साईं बाबा के श्री विग्रह का विधिवत एवं शास्त्र-सम्मत दैनिक पूजा का स्वरूप कैसा होना चाहिए यह जानने के लिए नन्देश्वर पाठक नें शिरडी समेत भारत और नेपाल में स्थित बाबा के अनेक मंदिरों का भ्रमण और उन मंदिरों में हो रहे पूजन-अर्चन का शोधपूर्ण अध्ययन किया।

इन मंदिरों में पाठ हो रहे अनेक स्तोत्र एवम भजनों का संकलन कर नन्देश्वर पाठक नें अपने निर्देशन में साईं धाम के बाबा के श्री विग्रह की नियमित पूजा एवं आराधना की सुचारू व्यवस्था की है जो अब नियमित रूप से साईं धाम में चल रही है। बाबा के मंदिर और उनके अनेकों भक्त भी नन्देश्वर पाठक भी इस संकलन से लाभान्वित हो सकें इस उद्देश्य से उनके संकलित स्तोत्र एवं भजनों को एक संग्रह के रूप में प्रकाशित करने की आवश्यकता को अनुभव किया गया। बाबा के कृपा-प्रसाद के फलस्वरूप आपके पास आई यह पुस्तिका इसी सत्प्रयास का परिणाम है।

विगत वर्षों में भारत ही नहीं बल्कि विश्व भर में बाबा के विषय में जानने की जिज्ञासा बढ़ी है साथ ही बाबा के कई भक्तों में बाबा के श्री विग्रह की पूजन विधि जानने की इच्छा जागी है। इस पुस्तिका के माध्यम से बाबा की सामान्य पूजन विधि को एक साधारण रूप समझा जा सकता है।

साईं सत्-चरित्र के अनेक उपाख्यानों से यह विदित होता है कि श्री साईं बाबा ने शिरडी में अपने वैयक्तिक उपासना को उत्सव रूप में - आरती, धूप-दीप, रथ की शोभायात्रा - के माध्यम में रूपान्तरित कर दिया था, जो सामूहिक प्रकार की उपासना थी। एक सामान्य व्यक्ति, जिसका मन बहिर्मुखी है और जो निष्ठ-भक्ति उपासना के उच्चतर सिद्धांतों से अवगत नहीं है, बाह्य उपासना की ऐसी सुलभ पद्धतियों का अनुशरण कर सकता है। अपने पूजन अर्चन के माध्यम से जब भी कोई भक्त अपने इष्ट देव या सद्गुरु से समर्पण भाव के साथ जुड़ता है तो उसके भाव अपने तक सीमित नहीं रहते। उनके आस पास के लोग भी उनसे आभा-मण्डल से लाभान्वित होने होने लगते हैं और उसमें जितना प्रबल शरणागत-भक्ति का भाव होता है, उसके चारों ओर वैसा ही प्रभाव व्याप्त होने लगता है।

हम आशा करते हैं कि बाबा के कृपा-प्रसाद रूप में यह पुस्तक हम सभी साईं भक्तों को साईं बाबा की पूजा एवं आराधना के माध्यम से उनके सर्वव्यापी भाव-रूप से हमें जोड़ने में सहायक होगी।

बाबा से यह प्रार्थना है कि वे हम सब पर कृपा करें ताकि हम उनके दिखाये मार्ग पर चल सकें।

- ***दिनेश 'भ्रमर'***

(वरिष्ठ हिन्दी एवं भोजपुरी साहित्यकार)

साई दर्शन के लिए लालायित आँखों से बहते आँसू साई नें देखे![1]

- *नन्देश्वर पाठक* [2]

मैं श्री साईं बाबा के चित्र से वर्षों से परिचित था, पर जब मेरा भतीजा कैप्टेन संगीत कुमार की नौकरी मर्चेंट नेवी में आफिसर पद पर १९७८ में हुई तो उसने मुम्बई से शिरडी के साईं बाबा के यहाँ माथा टेका। घर आने पर उसने साईं का उदी-प्रसाद देकर साईं बाबा के बारे में विस्तार से जानकारी दी।

तभी से मैं श्री साईं बाबा में रमता गया। उस समय तक मेरा कोई गुरु नहीं था, इसलिए मैंने साईं नाथ को ही अपना मान गुरु मान लिया। बाद के दिनों में श्री साईं कृपा से द्वारका पीठाधीश्वर श्री श्री १००८ श्री जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानंद सरस्वती जी महाराज ने मेरे घर सदेह पधार कर मुझे गुरु दीक्षा दी। तब मुझे लगा कि द्वारिकामाई में बैठने वाले साईं ने ही दूसरे में आकर मुझे दीक्षित किया है।

तभी से श्री साईं दर्शन की उत्कंठा और प्रबल हो चली, मगर पैसे के भयंकर अभाव में हजारों मील दूर का सफर कैसे हो, यह मेरे जैसे व्यक्ति के लिए एक समस्या थी। मैं अपने फार्म पर अक्टूबर १९८९ नवरात्रि में जा रहा था। तभी रास्ते में बगहा शुगर मिल के एक अधिकारी मिले। उन्होंने मुझसे पूछा, नन्देश्वर जी, क्या आप दक्षिण भारत के टूर पर जायेंगे ? मैंने कहा, पैसे कितने देने होंगे?

वे बोले, कुछ नहीं। सारा खर्च ईख विभाग, बिहार सरकार और मिल प्रबन्धन वहन करेगा। मैंने हां कर दी; तो उन्होंने मुझसे एक फार्म पर दस्तखत करा लिया। बात आई गई हो गई। मैंने समझा कि मुझे खुश करने के लिए उन्होंने (अधिकारी) यात्रा

---

[1] इस लेख का प्रकाशन 'श्री साईंलीला' के मई-जून १९९४ अंक में हुआ था।

[2] संपर्क : साईं प्रासाद, पठकौली, बगहा-2, पश्चिम चम्पारण बिहार - 845105

पर जाने की चर्चा चला दी थी। अकस्मात अप्रैल, १९९० में एक पत्र ईख विभाग, बिहार सरकार को सिर्फ़ मेरे नाम आया कि आप लोगों का रिजर्वेशन मुंबई जनता एक्सप्रेस में ४ मई, १९९० को करा दिया है। आप सभी पटना सेक्टेरियट (ईख विभाग) में ३ मई को शाम तक आकर अन्य जानकारी प्राप्त करें और उपस्थिति दर्ज करावें। शुगर मिल के अधिकारियों से मिला, क्योंकि समय कम था, लेकिन आश्चर्य यह कि उन लोगों को विभागीय कोई खबर नहीं थी। फिर भी मेरी चिट्ठी के आधार पर दक्षिण भारत की तैयारी शुरू कर दी गई, लेकिन मैं सोच में पड़ा था कि मद्रास, रामेश्वरम इत्यादि जाने के लिए मुम्बई-जनता में रिजर्वेशन का क्या तात्पर्य है ? खैर, हम पाँच व्यक्ति ३ मई, १९९० के तीसरे प्रहर पटना सेक्टेरियट के ईख विभाग में अपनी उपस्थिति दर्ज कराने पहुंचे। वहाँ जाने पर हमें जो प्रोग्राम मिला वह मद्रास, रामेश्वरम का न होकर पूरे महाराष्ट्र एवं गोवा का था। मनमाड़ से बस द्वारा पहले शिरडी श्री साईं मंदिर में कुछ देर रूक कर औरंगाबाद के लिए प्रस्थान करना था, जहां रात्रि में विश्राम करना था। सारे ग्रुप (३६ व्यक्ति) में एक मैं ही साईंनाम से परिचित था।

मुझे अपार खुशी हो रही थी, साथ ही दुःख इस बात का कि इतने दिनों की प्रतीक्षा के बाद साईं दर्शन का सौभाग्य मिला, वह भी आधा घन्टे के लिए। इस सोच में आँखों से आँसू छलक उठे। जब मेरे ट्रिप इन्चार्ज मि. अंसारी ने मेरी आँखों में आँसू देखें, तो पूछ पड़े कि क्या बात है? मैंने उनसे कहा कि मैं साईं भक्त हूँ। दो बार पहले भी मुम्बई जा चुका हूँ, लेकिन शिरडी साईं बाबा के यहाँ अब पहली बार जाना हो रहा है, जो लम्बी प्रतीक्षा के बाद आपके सहयोग से सम्भव हो रहा है, लेकिन वहाँ रूकने का समय बहुत कम है। उन्होंने कहा कि खैर, हम लोग वहाँ आधे घन्टे के बजाय दो घन्टे रूक जायेंगे। ४ मई, १९९० की रात में जब हम सभी पटना जंक्शन ट्रेन पकड़ने को आये, तो हमारी रिजर्व बोगी पर एक पैम्पलेट चिपका था, जिस पर साईं बाबा पत्थर पर बैठे फोटो था और उपर लिखा था -"*शिरडी के साईं बाबा का चमत्कार*"

तत्क्षण मेरे मन में यह बात आई कि यह सारा प्रोग्राम बाबा ने ही बनाया है और हम सभी साईं की चर्चा में मशगूल हो शिरडी के लिए चल पड़े। हमारी टीम ६ मई, १९९० की सुबह चार बजे मनमाड जं. पहुंची। जिस बस से आगे यात्रा प्रारम्भ करनी थी, उसे मुम्बई आना था, जो अभी नहीं आई थी। मुम्बई आफिस में फोन करने पर पता चला कि बस मनमाड दिन में ११ बजे तक पहुंच रही है। मैंने अपनी टीम के और साथियों से कहा कि हम शिरडी पहले चल रहे हैं। आप लोग शिरडी आकर मुझे पिक-अप कर लेंगे। मैं अपने चार साथियों के साथ सुबह ७ बजे शिरडी प्रस्थान कर गया। ९ बजे श्री साईं मंदिर पहुंच कर सामान क्लाक रूम में रख कर श्री साईं दर्शन करने चला गया। वहाँ मंदिर में जो अनुभूति हुई, उसे शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता। हर जर्रा साईं-साईं की झंकार कर रहा था। बाबा की मूर्ति में जैसे चुम्बकीय आकर्षण अपनी ओर खींच रहा था। इस परमानन्द में मन पुलकित हो रहा था।

हमारे बाकी साथी दिन में २ बजे शिरडी आये और आते ही बोल पडे कि साईं बाबा की कृपा से आज हम सबों की जान बच गई। मैंने पूरा ब्योरा पूछा, तो बोले, हमारी बस का अगला चक्का जोरदार आवाज के साथ फट गया और बस किसी तरह कंट्रोल में आई। हम सबों को आगे २००० मील की यात्रा करनी थी। तय हुआ कि इस बस को पुन: मुंबई वापस कर दूसरी बस लाई जाय, क्योंकि इसका चक्का बेकार था। छ; आदमी तुरंत बस लेकर मुंबई वापस चले गये। बचे ३० आदमी साईं उद्यान में तीन दिनों तक रूके रहें। साईं कृपा से दो घन्टे के बदले तीन दिनों का समय हमें साईं ने प्रदान किया। इस बीच में नित्य साईं दर्शन, आरती, सत्यनारायण पूजा इत्यादि करके मैं धन्य हो रहा था। और परमात्मा स्वरूप श्री साईं बाबा का वचन याद कर रहा था कि "मेरा भक्त हजारों मील दूर क्यों न हो, पर वह मेरे पास वैसे ही खिंचा चला आता है, जिस तरह डोर से बंधी गाड़ियां खिंची चली आती है।" बस भक्त में साईं के प्रति श्रद्धा और सबूरी रहनी चाहिये।

प्राण-प्रतिष्ठित साईं विग्रह के लिए दैनिक पूजा एवं अर्चना विधि

॥ श्री गणेशाय नमः॥

॥ ॐ श्री साईं यशः काय शिरडी वासिने नमः॥

प्रतिदिन प्रातःकाल में साईं के श्री विग्रह का स्नान एवं शृंगार करने के उपरान्त आवाहन, पूजन करें:

सर्व प्रथम गणपती का आवाहन, फूल अगरबत्ती चढ़ाकर शंख और घंटी बजा कर करें -

॥ गजाननं भूतगणादि सेवितं कपित्थ जम्बूफलसार भक्षितम्

उमासुतं शोक विनाशकारणं नमामि विघ्नेश्वर पादपङ्कजम् ॥

॥ ॐ नमः शिवाय ॥ *का पाँच बार उच्चारण करते हुए अगरबत्ती दिखावे और फूल चढ़ावें -*

आचार्य के साथ सभी भक्त बोलें -

॥ गुरुब्रम्हा गुरुविष्णु गुरुदेवो महेश्वरा |

गुरु साक्षात् परब्रम्ह तस्मय श्री गुरवे नमः ||

॥ ब्रह्मानंदम परमसुखदं केवलं ज्ञानमुर्तिम ।

द्वन्दातीतम गगन सदृशम तत्वमास्यादी लक्ष्यम ।

एकं नित्यं विमलं अचलं सर्व धिः साक्षीभूतम ।

भावातीतम त्रिगुण रहितम सद्गुरुम तं नमामि ॥

॥ अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहं

दनुजवनकृशानं ज्ञानिनामग्रगण्यम्।

सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं

रघुपति प्रियभक्तं वातजातं नमामि॥

॥ श्री सच्चिदानंद सदगुरु साईंनाथ महाराज की जय॥

दीपक जला कर आरती करें, घंटी बजाते हुए आरती दिखावे और निम्न श्लोकों को सस्वर गावें -

॥ मूकं करोति वाचालं पंगुं लंघयते गिरिम् ।

यत्कृपा त्वमहं वन्दे परमानन्दमाधवम् ॥

॥ अच्चुतम केशवं राम नारायणं कृष्ण दामोदरं वासुदेवं हरिम्

श्रीधरं माधवं गोपिका वल्लभं, जानकी नायकं रामचंद्रम भजे ॥

॥ हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे॥

खड़े-खड़े परिक्रमा करे (चारों ओर घूमें)

पंचारती जला कर, सभी भक्त हाथ में फूल लेकर आचार्य के साथ-साथ आरती गावें [3] -

॥ आरती साईंबाबा । सौख्यदातार जीवा । चरणरजातली ।

घावा दासां विसांवा, भक्तां विसांवा ॥ आरती साईंबाबा ॥

---

[3] इस आरती का माहात्म्य जानने के लिए साईं सत्-चरित्र का 33वां अध्याय देखें।

जाळुनियां अनंग । स्वस्वरुपीं राहे दंग । मुमुक्षुजनां दावी ।

निज डोळां श्री रंग ।। डोळां श्री रंग ।।आरती साईंबाबा ।।

जया मनी जैसा भाव । तया तैसा अनुभव । दाविसी दयाघना ।

ऐसी तुझी ही माव ।।

तुमचें नाम ध्यातां । हरे संसृतिव्यथा । अगाध तव करणी ।

मार्ग दाविसी अनाथा ।। आरती साईंबाबा ।।

कलियुगीं अवतार । सगुण पर ब्रम्ह साचार । अवतीर्ण झालसे ।

स्वामी दत्त दिगंबर ।। दत्त दिगंबर ।। आरती साईंबाबा ।।

आठां दिवसां गुरुवारीं । भक्त करिती वारी । प्रभुपद पहावया ।

भवभय निवारी ।। आरती साईंबाबा ।।

माझा निजद्रव्यठेवा । तव चरणरजसेवा मागणें हेंचि आतां ।

तुम्हां देवाधिदेवा ।। आरती साईंबाबा ।।

इच्छित दीन चातक। निर्मल तोय निज सुख।

पाजावें माधवा या। सांभाळ निज आपुली भाक। आरती साईबाबा॥

अब सभी भक्तगण आचार्य के साथ बाबा का इस श्लोक के साथ ध्यान करें -

॥ नमस्ते दिव्य रूपाय, नमस्ते सत्य मूर्तये।

नमस्ते शिरडी वासाय, साँईनाथाय नमोस्तुते॥

॥ सच्चिदानंद रूपाय मायातम विनाशिने।

निर्मालाय प्रशांताय श्री साईंनाथ पतये नमः॥

॥ पशूनां पतिं पापनाशं परेशं गजेन्द्रस्य कृत्तिं वसानं वरेण्यम।

जटाजूटमध्ये स्फुरद्गाङ्गवारिं महादेवमेकं स्मरामि स्मरारिम ॥

॥ शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं

विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम्।

लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं

वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्॥

॥ त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।

त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देव ॥

अब आचार्य भक्तों से फूल लेकर साईं बाबा को अर्पित करें-

आचार्य और सभी भक्त क्षमा-प्रार्थना करे -

॥ करचरण कृतं वाक्कायजं कर्मजं वा ।

श्रवणनयनजं वा मानसं वापराधं ।

विहितमविहितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व ।

जय जय करुणाब्धे श्री प्रभो साईंनाथ ॥

अंत में सिर्फ आचार्य प्रार्थना करें -

॥ कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा । बुद्ध्यात्मना वा प्रकृतिस्वभावात् ।

करोमि यद्यत्सकलं परस्मै । नारायणयेति समर्पयामि ॥

सभी भक्तगण साथ में बोलें -

॥ अनंत कोटी ब्रम्हांड नायक राजाधिराज योगिराज सदगुरू साईं नाथ महाराज की जय॥

॥ ॐ साईं नमो नमः श्री साईं नमो नमः जय जय साईं नमो नमः सदगुरु साईं नमो नमः॥

॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

आचार्य शंख बजा कर पूजन समाप्त करे और प्रसाद भक्तों में बाँटे -

(आचार्य के अलावा भक्तगण बाबा के मूर्ति को स्पर्श न करें ।

बाबा को फूल और प्रसाद आचार्य के माध्यम से हीं चढ़ाएं ।

भक्तगण सिंहासन के नीचे हीं अगरबत्ती, दीप इत्यादि जलावें ।)

व्यक्तिगत नित्य दैनिक पूजा निर्देश[4]

भगवान श्री साईं बाबा के मार्गदर्शन हेतु भक्त को सुबह उठते ही बिस्तर पर बैठकर, अपने दोनों हाथ खोल कर; उन्हें देखते हुए निम्न स्तोत्र का पाठ करपरम सद्गुरू साईं-नाथ महाराज का स्मरण करना चाहिये । इस स्तोत्र के सुबह पाठ करने से सम्पूर्ण दिन शांती के साथ गुजारने में सहायक सिद्ध होता है -

- श्री साईं मंगल दर्शन स्तोत्रम् -

॥ कराग्रे वसते साईं, कर मध्ये शिरडी-पते।

कर मूले तु साईंनाथ:, प्रभाते कर दर्शनम् ॥

॥ मंगलम् श्री साईंनाथ, मंगलम् शिरडी-पते।

मंगलं करूणाकरः, मंगलायतनं गुरू:।

गुप्तेश्वरेन कृतं स्तोत्रं सर्व रोग निवारण ।

सर्व सम्पत् करं शीघ्रं पुत्र पौत्रादि-वर्धनम् ॥

---

[4] साईं लीला के विभिन्न अंको में प्रकाशित लेखों से संकलित

बिस्तर से उठते हुए, पृथ्वी प्रकृति को प्रणाम करते हुए, साईं महाराज का स्मरण मन में एक सुखद अनुभूति पैदा करता है। अत: श्री साईंनाथ महाराज का स्मरण निम्न श्लोक के माध्यम से करना चाहिये....

- **श्री शिरडी साईं स्मरण -**

॥ दत्त दामोदरं पंढरी विठ्ठल केशवं पद्मनाभम् श्री साईंनाथ।

चिदानंद चैतन्य ज्योति स्वरूपं सगुण ब्रह्म रूपं श्री साईंनाथ ॥

परम साईं दिव्यं त्रिकालज्ञ देवं अखंडम् अनन्तम् श्री साईंनाथ।

सत्यं बलं शौर्य धैर्य अनेक अवतार श्री साईंनाथ ॥

नित्य क्रियाओं से निवृत्त होकर स्नान करे। फिर श्री साईं महाराज का स्तवन करे। साईं स्तवन करने से घर में सुख-शांति और सम्पन्नता की वृद्धि होती है। समस्त आधि-व्याधि का नाश होता है। अत: श्री साईं की शरण में पहुंचने के लिए यह एक सरल सहज माध्यम कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी....

- **श्री साईंनाथ स्तवन-**

॥ साईं नारायणं साईं दामोदरं साईं हृषीकेशं पुण्डरीकाक्षम् ।

साईं जगन्नार्थ साईं विश्वनाथं साईं प्राणनाथं शंकरं नमामि॥

॥ साईं वामनं मधुसूदनं रामं साईं वासुदेवं साईं पद्मनाभम् ।

साईं दिव्यदेहं साईं ज्योतिरुपं साईं निरंकारं प्रणवं नमामि ॥

॥ साईं नित्यमुक्त क्षमाशील शान्तं साईं यज्ञपुरुषं साईं पुरुषोत्तमम्।

साईं दुष्ट दलनं साईं रोग शरणं साईं पाप हरणं साईंनाथ नमामि ॥

तत्पश्चात श्री साईंनाथ महाराज के चित्र के समक्ष घी का दीपक जलायें और निम्न पंचक का पाठ करते हुए एक आसन पर बैठ कर "श्री साईं ध्यान" करना चाहिये। पंचक के पाठ से साईं के विभिन्न अवतारों के साथ-साथ हमें उनकी सार्वभौमिक व्यापक छवि का ध्यान करना होता है। अत: यह पंचक इस दृष्टि से हमारे लिए सहयोगी सिद्ध होता है...

- श्री साईंनाथ पंचकम् -

॥ महेशं सुरेशं पंढरी विठ्ठल, श्री साईं रूपं भजेहम भजेहम।

दत्त गुप्तेश्वरं माणिक प्रभु अक्कल, श्री साईं रूपं भजेहम भजेहम ॥

॥ रामं कृष्ण विठोबा गोविंदम्, श्री साईं रूपं भजेहम भजेहम ।

मुकुन्द बराह च कूम गोपालम्, श्री साईं रूपं भजेहम भजेहम ॥

॥ मत्स्य दामोदरं वामनं आदिनाथम्, श्री साईं रूपं भजेहम भजेऽहम ।

संत चूडामणिम् केशवं पद्मनाभम्, श्री साईं रूपं भजेहम भजेहम ॥

॥ अनंन्तम् चिरन्तम् विभुं व्यापकम्, श्री साईं रूपं भजेहम भजेहम

अपूर्व अद्भुतं श्री सिद्धिनाथम्, श्री साईं रूपं भजेहम भजेहम ॥

॥ चिदानंद साईं जगज्जालपालम्, श्री साईं रूपं भजेहम भजेहम ।

परंब्रह्म सद्गुरू ऊदी स्वरूपम्, श्री साईं रूपं भजेहम भजेहम ॥

साईं-स्तुति के माध्यम से श्री-साईं नाम संकीर्तन को अभिव्यक्ति देना चाहिये। इसके लिये सहज सरल शब्दों में लय के साथ श्री साईं स्तुति' आप सभी पर अपना प्रभाव छोड़ती है :

- श्री शिरडी साईं स्तुति -

॥ गजाननम् विनायकम् रिद्धि-सिद्धि दायकम् ।

महेश्वरं दिनेश्वरम् नमामि साईं सद्गुरूम् ।

अच्युतं राघवं सत्य नारायणम् ।

श्रीधरं जनार्दनम्, नमामि साईं सद्गुरूम् ॥

शिरडी साईं केशवं पंढरीनाथ विठ्ठलम् ।

आदिशक्ति मारतम् नमामि साईं सद्गुरुम् ॥

द्वारका माई वासिनं कफनी भाल धारिणम्।

दिव्य लाल लोचनम् नमामि साईं सद्गुरूम् ॥

साईं ब्रह्म वाचकं निवृत्ति रूप धारकम् ।

समस्त लोक व्यापकं नमामि साईं सद्गुरुम्॥

अनाथ नाथ अद्भुतम् चिरन्तरम् निरन्तरम्।

स्वरूप साईं सुन्दरम् नमामि साईं सद्गुरूम् ॥

साईं चेतन चेतनम् साईं भेषज भेषजम् ।

ज्ञान ध्यान बल प्रदं नमामि साईं सद्गुरूम् ॥

दीन हीन पोषणम् सदा समृद्धिवर्धिनम् ।

सत्य दया सागरं नमामि साईं सद्गुरुम् ॥

चैतन्यघन गुप्तेश्वरं शिरडीपते भजाम्यहम् ।

चक्रपाणि माधवं नमामि साईं सद्गुरूम् ॥

साईं रिपु मर्दनम् दुःस्वप्न साईं नाशन्म ।

रोग-दोष शोषणम् नमामि साईं सद्गुरुम्॥

मंगल-मूर्ति श्री साईंनाथ महाराज की छवि को मन में धारण करते हुए, "श्री सदगुरु साईं नाथाष्टकम्" का पाठ, उनके सामीप्य होने में अहं भूमिका निभाता है। इसके पाठ से ऐसा लगता है मानो भगवान बाबा के पास ही हम बैठे हुए हैं और उन्हें अपना नमन प्रस्तुत कर रहे हैं। एक आत्मीय बोध होता है इसके पाठ से, अवलोकन करें....

- श्री सदगुरु साईं नाथाष्टकम् -

नमोस्तुते शिर्डीवासे, भक्त दासाय पूजिते।

चिमटा चिलम पात्र हस्ते, साईं बाबाय नमोस्तुते॥

एकासन स्थिते साईं, निम्ब वृक्ष: तले नित्यम्।

सर्वबाधा हरे साईं, साईं बाबाय नमोस्तुते॥

नमस्ते कफनी धारिणे साईं, द्वारका-माई विराजते।

सर्व दुःख हरे साईं, साईं बाबाय नमोस्तुते ॥

नमस्ते देखिणेमुखी साईं, धूनी प्रस्फुटायै सदा।

सर्व सिद्धि प्रदे साईं, साईं बाबाय नमोस्तुते ॥

छिन्न वस्त्र धरे कारुण्यपूर्णा, लोक मंगल सिद्धये।

जय-जय शिर्डिश्वरा साईं, साईं बाबाय नमोस्तुते॥

सर्व कामाप्नोति साईं, आधि-व्याधि भयं हरेत।

मंगलं गुरु देवाय साईं, साईं बाबाय नमोस्तुते॥

शिरडी पते सर्वज्ञे कृपालम्, दीनबन्धो साईं नाथम्।

अल्लाह मालिक साईं रुपम्, साईं बाबाय नमोस्तुते॥

साईं चरित पठे नित्यं, ऊदी प्राप्नोति सर्वदा।
सर्व सौभाग्य वर्धनम् साईं, साईं बाबाय नमोस्तुते॥

य: पठेत प्रारुत्थाय श्रुणु, चरित्रम्ऽखंड कीर्तिम् ।
क्षमस्व भगवत्साई क्षमाशीले, त्रिगुणात्मने साईं नमः॥

साईं नाथाक्षरं निराहारो, य: पठेद् गुरुवासरे।
साईं बाबा भवेन्नित्यं, प्रसन्ना वरदा शुभा ॥

गुप्तश्वरेण ग्रंथिता अष्टकम्, साईं नाथार्पिता।
मम वसतु गृहे साईं, कुयाति सदा मंगलम् ॥

श्री साई – संकट निवारण वरदान स्तोत्र

श्री साईं नाथ कृपाल भज मन, हरण भव भय दारुणम् ।।

करूणानिधान पतित पावन, दैन्य दुःख निवारणम् ।।

श्री राम तुम श्री कृष्ण तुम, देवाधि देव श्री शंकरम्।।

गम्भीर शान्त सुहासिनी, सौम्य छवि अति सुन्दरम् ।।

भज दीन बन्धु दयानिधे, आजानभुज शिरडीश्वरम् ।

पाषाण आसन कफनी, सिर शुभ्र वस्त्र धारणम् ।।

नित नीम वृक्ष निवास कर, गुरु स्थान गौरव भूषणम्।

संजीवनी उदी शक्ति दायक, सर्व दुःख निवारणम्।।

मम पाप ताप दारिद्र दुःख, आधि व्याधि निवारणम् ।

भय शोक शत्रु विनाशक, श्रद्धा- सबुरी प्रदायकम्।।

बल बुद्धि विद्या मातृ पितृ, भक्ति संतन संग हो।।

यश कृर्ति सेवा भावना, सबके प्रति सद्भाव हो।।

श्री कृष्ण सम श्री नाथ साईं, स्याम सुन्दर साँवरो।।

श्री राम सम निज भक्त के, प्रभु राम बन दुःख संवरो।।

एहि भांति बारम्बार दो, कर जोड़ विनती है प्रभु।

जैसा निभाया आजतक, आगे निभाना साईं प्रभु।।

शिरडी सदा आता रहूँ, सामर्थ्य इतना दीजिए।।

शिरडी सदा जाता रहूँ, प्रभु कृपा इतनी कीजिए।।

ना हो सके तब दास को, निज धाम बुलवा लीजिए।

अपने चरण में दास को, थोड़ी जगह तो दिजीए।।

अरदास

सदा-सदा साईं पिता, मन में करो निवास।

सच्चे ह्दय से करूं, तुम से ये अरदास।

कारण कर्ता आप हो, सब कुछ तुम्हारी दाता।

साईं भरोसे मैं रहूँ, तुम ही हो पितु माता।

विषयों में मैं लीन हूँ, पापों का नहीं अंत।

जैसा भी मैं तेरा हूँ, राख लियो भगवन्त।

राख लियो भगवन्त, साईं गरीब-निवाज।

तुझ बिन् तेरे बाल के, कौन संवारे काज।

दया करो प्रभु दया करो, दया करो मेरे साईं।

तुझ बिन मेरा कौन है, बाबा इस जग माहीं।

मैं तो कुछ भी नहीं, सब कुछ तुम हो नाथ।

बच्चों के सर्वस्व प्रभु, सदा रहो मेरे साथ।

साई आरती

आरती श्री साईं गुरुवर की। परमानंद सदा सुरवर की।।

जाकी कृपा विपुल सुखकारी। दुख-शोक संकट भयहारी।।

शिरडी में अवतार रचाया। चमत्कार से जग हर्षाया।।

कितने भक्त शरण में आये। सब सुख शांति चिरंतन पाये।।

भाव धरे जो मन में जैसा। पावत अनुभव वो ही वैसा।।

गुरु की उदी लगावे तन को। समाधान लागत उस मन को।।

साईं नाम सदा जो गावे। सो फल जग में शाश्वत पावे।।

गुरूवासर करि पूजा सेवा। उसपर कृपा करत गुरु देवा।।

राम कृष्ण हनुमान रूप में। जानत जो श्रद्धा धर मन में।।

विविध धर्म के सेवक आते। दर्शन कर इच्छित फल पाते।।

साईं की जय सदा ही बोलो। अंतर मन में आंनद घोलो।।

साईं दास आरती जो गावे। बसी घर में सुख मंगल पावे।।

भज ले मन श्री साईंनाम

- *आनंद स्वरूप भटनागर,*

साईं लीला 1986 नवंबर अंक में प्रकाशित

भज ले मनुआ साईंराम

मधुर मनोहर मंगल धाम

भज ले मन श्री साईंनाम ।।

साईंनाम के दो अक्षर में

सारा ब्रह्म समाया है,

आदि अन्त जड़-चेतन अम्बर

इनसे ही बन पाया है।

बार-बार इन युगल चरण को

युगयुग करते रहे प्रणाम ।।

भज ले मनुआ साईंराम

भज ले मन श्री साईंनाम ।।

विमल द्वारकामाई मस्जिद

विश्व विदित धूनी उपकार

कभी नहीं हम भूल सकेंगे

बाबा के अविरल उद्गार।

मन-क्रम-वचन में प्रीत लगाकर

छोड़ो उस पर अपने काम॥

भज ले मनुआ साईंराम

भज ले मन श्री साईंनाम ॥

साईं नाम की अद्भुत महिमा

बिगड़े काम संभल जाते

रोग, काल, व्याधि और बाधा

सब के सब ही टल जाते ।

अपने उर में ज्योति जलाकर

भजन करो तुम प्रातः शाम॥

भज ले मनुआ साईंराम

भज ले मन श्री साईंनाम ॥

साई प्रणामांजली

- *रश्मि रतूडी*

साईं लीला 1998 जुलाई-अगस्त अंक में प्रकाशित

ऋद्धि सिद्धि के दाता सांई, बार बार है तुम्हें प्रणाम

दीनों के दुःख हरने वाले, शांति प्रदाता तुम्हें प्रणाम

जल से दीप जलाने वाले, सद्गुरु सांई तुम्हें प्रणाम

प्रलय काल को देखने वाले, भाग्य विधाता तुम्हें प्रणाम

सबमें समता रखने वाले, जगत के नायक तुम्हें प्रणाम

भक्त की टेर को सुनने वाले, सबके दाता तुम्हें प्रणाम

बार-बार है तुम्हें प्रणाम, कोटि-कोटि हैं तुम्हें प्रणाम

दया दृष्टि हम पर कर साई

- ***देवदत्त खरे***

साईं लीला 1998 जुलाई-अगस्त अंक में प्रकाशित

दया दृष्टि हम पर कर साईं,

जीवन-मुक्त बना देना।

मुख से नित तेरे गुण गाऊँ।

हृदय पटल पर तुम्हें बिछाऊँ।

रोम-रोम में तुम्हें बताऊं ।

मेरे हलचल-मय जीवन को

साईं शान्त बना देना।।

मस्तक सोचे अच्छी बातें ।

आंखे देखे अच्छी बातें।

कान सुने नित अच्छी बाते।

साईं मेरा जीवन क्रम

कुछ ऐसा तृप्त बना देना ।।

हाथ सदा सेवा अपनाये।

यह पग नित सतपथ पर जाये ।

जीवन के कर्तव्य निभाये।

जग में रहूँ मगर जगती से

तुम निर्लिप्त बना देना ।।

दया दृष्टि हम पर कर साईं,

जीवन-मुक्त बना देना।

श्री साई सत्-चरित्र माहात्म्य

- *जे पी श्रीवास्तव*

साई लीला 1998 जुलाई-अगस्त अंक में प्रकाशित

श्री साई सत्चरित्र एहि नामा। सुनत श्रवन पाइअ विश्रामा ॥

त्रिविघ दोष दुख दारिद्र दावन । कलि कुचालि कुलि कलुष नसावत ॥

आवत एहि मग अति कठिनाई। साई कृपा बिनु आइ न जाई।

गृह-कारज नाना जंजाला। ते अति दुर्गम सैल बिसाला ॥

यह राम चरित जान पै सोई। कृपा साई कै जापर होई॥

इस ग्रंथ का पठन-पाठन करते जो श्रद्धा के साथ।

उनकी हर मनोकामना पूरी कर देते साईंनाथ ॥

साई दोहे

- *रामजी शर्मा*

साईं लीला मई-जून 1998 अंक में प्रकाशित

गणपती तुम हो, शारदा तुम हो, तुम हो मेरे राम।

भक्तों के हनुमान तुम्ही हो, तुम्ही हो भोले राम ॥

करता वंदन निशदिन तुमको, करता तुमको प्रणाम।

अब तो कृपा बरसा दो साईं, तुम्ही हो मेरे राम ॥

चरणों की शरणागति दे दो, दे दो अपना धाम।

मुझको भी इक दास जानकर, दे दो अपना नाम ॥

तेरे नाम की महिमा जाने, जो जपे तेरा नाम।

तेरी शक्ति को पहचाने, जो गये शिरडी धाम ॥

कहने को शिरडी में रहते, जग है सारा धाम।

निज-भक्तों हेतु दौडे आते, उनके निज-निज धाम ॥

कैसे कहूं तुम सन्त हो साईं, तुम हो आदि-अनंत।

सृष्टि के तुम आदि बिन्दु हो, प्रलय के हो अंत॥

मैं अन्धा हूं माया का, अब कर दो मेरा कल्याण।

मिटा दो मेरे दुर्विकार को, अब मुझको अपना ही जान॥

नीम की पात की दवा पिला दे, कर दे अब मेरा परित्राण।

मेरे शीश पर हाथ लगा दे, दे दे उदी का वरदान॥

भेदभाव को मिटा सकूँ मैं, सबको अपना जान सकूँ।

सब में तेरा दर्शन पाकर, परम-ब्रह्म पहचान सकूँ ||

सप्तशृंगी देवी बतलाती, तुम हो कलयुग के भगवान।

पाकर तुम्हारे दर्शन से, मिटते हैं सब भय-अज्ञान ||

रामायण के राम तुम्ही हो, गीता के घनश्याम तुम्ही हो।

नानक हो तुम गुरु ग्रंथ, वेदों के अवदान तुम्ही हो ॥

शिरडी पावन धाम है, जग का सुन्दर नाम ।

जिस-जिस ने धाया इसे, बन गये उसके काम ।।

पारस हो तुम इस जग के, जग है लौह समान ।

जिस-जिस को छुआ तुमने, हो गये स्वर्ण समान ॥

जो यह प्रकृति के दोहे गावें, हो कर के निष्काम ।

साईं उनके कष्ट हरेंगे, सिध्द होंगे सब काम ।।

गुरुवार गुरु का मानकर, कर लो उनका ध्यान ।

खुद चलकर के आयेंगे, साईंनाथ भगवान ।

परम गुरू श्री साईनाथ शतक

(भुजंगप्रयात छन्द)

- ***गुप्तेश्वर गुप्त***

साईंलीला जनवरी-फ़रवरी 1997 अंक में प्रकाशित

नमो गणेश्वर वक्रतुण्डो, वीणापाणी नमो नमो।

नमो त्रिदेवो त्रैगुण्य रुपं, साईं स्वरूप नमो नमो।

नमो सचिदानंद हे साईं नाथा। सभी पीड़ा हरती सदा तेरी गाथा ॥

नमो शिरडी वासी नमो कफनी धारी। नहीं जाने कोई भी लीला तिहारी।

उदारी वो ऐश्वर्य मंडित निराले। श्री कीर्ति वैराग्य वो ज्ञान वाले।

तेरा नाम जपने से हो इच्छा पुरी। वो गायन से मिलती हैं श्रद्धा सबुरी ॥

सकल सुख के दातार श्री साईं बाबा। लो मेरा नमस्कार श्री साईंबाबा ॥

ले माँगते साईं टमरेल झोली। कि रोटी की टुकड़ा मिले माई भोली।

बुलाकर किसी को तो सांजा खिलाते। किसी से ले खिचड़ी स्वयं आप खाते।

गणू दास से ही तो कविता रचाई। वो हेमाडपंत से गाथा दिखाओ ॥

रहे लक्ष्मी, बायजा पर दयालु। उन्ही हाथों भोजन किया हैं कृपालु ॥

दो मुझको भी दीदार श्री साईंबाबा। लो मेरा नमस्कार श्री साईंबाबा ॥

हुए त्रस्त जब रोहिला के निवासी। तुम्ही ने तो धीरज दे मेटी उधारी ॥

तू ही पंढरीनाथ विट्ठल अवतार । गणू को दिखायी यमुना-गंगा धारा॥

तुम्हीं ने तो अल्लाह मालिक पुकारा। तुम्ही ने तो भगवंत राज दुलारा॥

वो कर दी कृपा लाल नाना को देकर। कृतार्थ हुए भक्त दर्शन को पाकर।

दुखी आया दरबार श्री साईं बाबा। लो मेरा नमस्कार श्री साईंबाबा ॥

गुरु शुक्र के दिन जले धूप खासी1 तुम्ही एक गीता, कुरान प्रकाशित ॥

तले नीम के तुमने आसन जमाई। तभी बसे चावड़ी ध्यान लेंडी लगाई।

प्रकट की तुम्ही ने चिमटा से आग । तभी द्वारकामाई में धूनी जागी ।

तुम्ही से तो पाये तुरंग चांद भाई। और भुखे को रोटी तुम्ही ने खिलाई।

हो जन-जन के आधार श्री साईंबाबा ॥ लो मेरा नमस्कार श्री साईंबाबा ॥

पानी से दीपक जलाकर दिखाये। वो नीम के पत्ते भी मीठे बनाये ॥

ग्रहों को तुम्ही शांत करते हो साईं। नचाते हो भूत और पिशाच को साईं॥

गेहूं संग पीसी जो हैजा थी खासी। किये चंगे तुने ही शिरडी निवासी ॥

किसी को दी माया और जीवन किसी को। जो आया शरण में संभाला उसी को।

सदा लोक परलोक में तुम विचरते और कल्याण के हेतु भू पर उतरे॥

हां गोदावरी तट बड़ा भाग्यशाली। बना शिरडी तीरथ भरे झोली खाली॥

वो दीन दाता विनयशील स्वामी। क्षमा-प्रार्थी हूँ नयन-पथ के गामी॥

मैं डयोठी पे आके पड़ा आज तेरी। रखो लाज मेरी करो अब न देरी॥

दो बिगड़ी सवाँर श्री साईंबाबा । लो मेरा नमस्कार श्री साईंबाबा ॥

हूँ मूरख, अज्ञानी तुम्हारा भरोसा। है दानी न तुमसा भिखारी न ||

नमो जीवन ज्योति नमो साईंबाबा। बनाई हैं शिरडी तुने काशी काबा ।

रतन जैसे भक्तों ने संतान पाई। तुम्ही ने स्वरूप की महिमा दिखाई।

राम नाम की मरजादा निराली। दो, लाड-दुलार श्री साईंबाबा ।।

नमो मंगलमूर्ति नमो श्री गजानन। नमो साईं राम नमो साईं मोहन ॥

नमो विश्वनाथ नमो। नमो हनुमत वीरा नमो सिद्ध ज्ञानी॥

नमो सचिदानंद साईं अरुपा। नमो हे कृपालु शिवोऽम स्वरूपा ॥

नमो अन्नपूर्णा नमो साईं माता। नमो विश्वरुपा नमो सर्व ज्ञाता।

नमो दत्त अवतार श्री साईं बाबा । लो मेरा नमस्कार श्री साईंबाबा ॥

मिटाये सदा भ्रम तुम्ही ने भयंकर। और मेघा को दर्श दिये बन के शंकर ।

सो इस रूप शास्त्री मुले जी ने पाया। वो डॉक्टर ने माथा झुकाया

वो भीमाजी पाटील के रोग मिटाये। आर काका महाजनी सुख चैन पाये।

वे गनपत? आलंदी के स्वामी । तुम्ही ने सभी के हरे रोग नामी॥

करो जग का उद्धार श्री साईं बाबा। लो मेरा नमस्कार श्री साईंबाबा ॥

निर्गुण निराकार परब्रह्म साईं। हे सत्-चित् क्षमाशील आनंद साईं॥

शरण हूँ तुम्हारी सकल सुख के दायक। ओ साईं अनाथ पर हो सहायक॥

सदा एक ही आसरा साईं तेरा। जो दे रोशनी और छोटे अंधेरा ॥

ये तूने ही की साईं सबकी भलाई। सुनो नाथ मेरी दुहाई दुहाई।।

जपूँ बार बार श्री साईं बाबा। लो मेरा नमस्कार श्री साईंबाबा ॥

सभी मोह बंधन गये स्वार्थ नाता। शरण हूँ तिहारी हे भाग्य-विधाता ।।

सुनो मेरे साईं ओ आदि अनन्ता। और करुणा कर्तारी नमो आरिहन्ता।।

तुम्ही देव कुलदेव मेरे हो साईं। पड़ा हूँ चरण में लकुटिया की नाई ॥

दो कष्ट निवार श्री साईं बाबा। लो मेरा नमस्कार श्री साईंबाबा ॥

तुम्हे वायजा माँ जहाँ बन में पाई। पत्तल भाजी और रोटी खिलाई।

जहर सापँ का तो उतारा तुम्ही ने। शामा को जीवन दिया फिर तुम्हींने।

किया रोग से मुक्त तात्या जी प्यारा। दिया उसको जीवन ही अपना वो सारा।

किसी को दी बन के चिकित्सक दवाई। सजग कर किसी की अलफ हैं कटाई।।

हो कितने उदार श्री साईं बाबा। लो मेरा नमस्कार श्री साईंबाबा ।।

हैं द्वारका-माई दया रुप धारे। वहाँ बैठे बाबा सुनों सत्य प्यारे ॥

निकट जो है जाते वे आनन्द पाते। जो गोदी में बैठे त्रय-ताप नचाते।।

कि हो करके चरणों में तन-मन से अर्पित। गुरु से न बढ़कर कोई और मानता।।

कहो, सुन लो पुकार श्री साईं बाबा। लो मेरा नमस्कार श्री साईंबाबा ।।

शरण तेरी आये सो दीजे सहारा। तेरे बिन न स्वामी अब कोई हमारा।।

सभी विघ्न बाधा तुम्ही टालते हो। बने भक्त वत्सल सदा पालते हो।

तुम्ही ने उबारे और सारे हैं पापी। भजे जो तुम्हें साईं होवे प्रतापी ।

पुकारूं परम श्रेष्ठ अनमोल साईं। सदा सर्व व्यापी परब्रह्म साईं ॥
करो भव से पार श्री साईं बाबा । लो मेरा नमस्कार श्री साईंबाबा ॥
करें प्रार्थना पाद पंकज पलोंटे । लगा घूल माथे चरण तेरे लोटें।
करो न विलम्ब सुनों साईं सेवा। पड़े देहरी पे बनें नहीं सेवा ॥
वो साईं समर्थ गुसाईं हमारे । तुम्ही रहते मेरे यूं बनकर सहारे।
ये गाये गुप्तेश्वर सदा तेरी गाथा । सगुण के स्वरुपा श्री साईं बाबा॥
हो मेरे कृपागार श्री साईं बाबा। लो मेरा नमस्कार श्री साईंबाबा ॥
नमो हे नमो ऊदी दाता । तुम्ही मेरे बंधु, पिता, गुरु, माता ॥
सभी पाप और ताप होते निवारण। जपे साईं साईं हृदय कर जो धारण ।
दयावन्त श्रीमंत साईं नमस्ते। शिरडी साईं बाबा नमस्ते-नमस्ते ॥
तुम्हें पूजे संसार श्री साईं बाबा। लो मेरा नमस्कार श्री साईंबाबा ॥
सदा जीभ जपती रहे साईं नामा। सदा पाव चलते रहें साईं-धामा ॥
ये नैना चाहें दर्श वो साईं बाबा। ये कान भी सुनना चाहें वो साईं बाबा ।
झुके माथ तेरी चरण वंदना में। जुड़े हाथ मेरे तेरी प्रार्थना में।
किया पान लीलामृत हमने तुम्हारा। यही एक सौभाग्य पाया है प्यारा॥
सुखी रखो परिवार श्री साईं बाबा। लो मेरा नमस्कार श्री साईंबाबा ॥
तुम्ही दास के दुःख दारिद्र हरते। तुम्ही उसको संसार से पार करते।
करो दूर मेरे सभी पाप बाबा। मिठाई सभी शोक संताप बाबा ॥

कहाँ? नाथ करते हो देरी। चरण दाब लो साईं हर भूल मेरी।।

सुनों कान दे आज बिन्ती हमारी। न दूजा सहारा शरण हूँ तिहारी।।

ये सुन लो गुहार श्री साईं बाबा। लो मेरा नमस्कार श्री साईंबाबा ॥

तुम्हें अपना मानू तुम्हें जानू। तुम्हारी गुण-महिमा कहाँ तर गाऊं।

कहें कोन तेरे चरित वो निराले। उन्हे अन्न, वस्त्रो की तंगी न होगी।

दया ऋद्धि-सिद्धि प्रबल शक्ति पाऊं। शतक पढ़ के तुमको हे नाथ मनाऊं ॥

करो सब पे उपकार श्री साईं बाबा। लो मेरा नमस्कार श्री साईंबाबा ॥

जय शिरडीपति सद्गुरू, साईंनाथ महाराज।

सर्व कामना पूर्ण हो, आशीष दो मम आज ॥

श्री साईं चालीसा

- ***जुगल किशोर सोनी, रायपुर, म.प्र.***

श्री साईंलीला, जुलाई-अगस्त 1999 अंक में प्रकाशित

साईं रूप धर शंकर जब आये। माता पिता वह ही कहलाये ॥ .

जब जब पाप भू पर बढ़ जाये। मानक रूप हर युग तू आये ॥

जब न याद तुझे कर पाये। पाप कर्म में लिप्त हो जाये

पापी बैरी कोई भी प्राणी। श्रद्धा भाव से जो शरण अपनाने ॥

द्वार तिहारे भक्त जो आता। जैसा भाव वह तुझे चढ़ाता ॥

जिन भावों को वो तुझे चढावें । उन भावों का फल वो पावें ॥

जै जै जै साईं मात भवानी। घटता पल छिन कोई न जानी ॥

तू सब जग का पालन करती। सब भक्तों का ध्यान तू धरती ॥

जन मानस को याद दिलाने। भगवन् भक्ति में उसे लगाने ॥

पाप कर्म वो न कर पाये। सद्मार्ग उसको दिखलाने ॥

साईं मात जगदम्ब भवानी। तेरी लीला कोई न जानी।

साईं तू कल्याणी माई। सबका दुख तू ही हर जाई ।।

साँचा नाम तेरा जग माते। जो जिस भाव तुझे अपनाते ।।

जब प्रसन्न उस पर हो जाती। द्वार खोल कुबेर लुटाती ।।

सब भक्तों की तारन हारी। जै जै जै साईं मात भवानी।।

ब्रह्मा विष्णु तू ही रुद्राणी। महिमा तेरी न जाय बखानी।।

सब देवों की तुम ही भवानी। काल रुप तुम ही सब जानी ।।

प्रसन्न होय जब साईं माते। करे गुणगान भजन मुख गाते।।

अर्पण करें जो सब कुछ तेरे। मन-कुभाव हरे तू मेरे ।

भेदभाव तू मन से हटाने। एक दृष्टि समभाव जगाने।

जग-जननी जग साईं माते। भक्त हमेशा तुझको भाते।।

इस जग में तू जबसे आई। उद्धार करे भक्तों की माई।।

जो जन तुझको समझ न पाते। जब दुख पड़े द्वार खटकाते।

साईं मात सुख चरन समाया। मानुष इसे समझ न पाया।

लोभ, मोह में जब हम पड़ जाते। मानुष तन तब व्यर्थ गँवाते।।

जितने भक्त शरण में आते। माया ही तुझसे फरमाते ।।

पूरन करे कारज तू उनके। तृष्णा जाय न उनके मन से ।।

अष्टयोग नौ निधि की दाता। जै जै जै जग साईं माता।

अनंत कोटी तू साईं माते। महिमा तेरी भक्त ही गाते।।

ब्रह्माण्ड नायक तू जग जननी। करो प्रदान भक्ति भवतरणी॥

परब्रह्म तू साईं माते। चरण धूलि जब हम पाते।

सचिदानंद रूप जब तुम धारा । करने आई जगत उद्धारा॥

सद्गुरु रूप साईं तू माता। रूप तेरा सबको हर जाता ॥

नहीं मेरी अब कुछ इच्छा साईं। भक्ति भाव भर दे तू माई॥

जै अम्बे जै साईं माते। गुणगान जपे न हृदय घात॥

तू जग की है पालन हारी। रक्षा करो तुम सदा हमारी॥

दे शक्ति तू इतनी माई। दुख में न तुझको मैं भुला ।॥

वर ऐसा दे तू साईं माते। निश दिन सेवे चरन तुम्हारे ॥

जो यह पाठ करें घर ध्याना। उसका होय सदा कल्याण ॥

कोटि कोटि माँ तुझे प्रणाम। ब्रह्मलीन हो नित जपे जो नाम॥

श्री साई स्तोत्रम्

- साधु एकान्त, नैरोबी, केनिया

साईं लीला मई- जून 2004 अंक में प्रकाशित

कोटि सूर्य प्रकाशाय सृष्टि चैतन्यरूपिणे।

परंज्योतिस्वरूपाय साईंनाथाय ते नमः॥१॥

निर्मलज्ञानरूपाय मायामलविदारिणे।

परब्रह्म स्वरूपाय साईंनाथाय ते नमः ॥२॥

सत् स्वरूपाय शुद्धाय विष्णवे सर्वसाक्षिणे।

वासुदेवाय नित्याय साईंनाथाय ते नमः॥३॥

अनन्तायाप्रमेयाय दृग्रूपाय स्वयंभुवे।

परमाय प्रशान्ताय साईंनाथाय ते नमः॥४॥

सदानन्द स्वरूपाय लीलाविग्रहधारिणे।

मायामानुषरूपाय साईंनाथाय ते नमः॥५॥

अखण्डप्रेमरूपाय भक्तानाम् क्लेशवारिणे।

दत्तात्रेयावधूताय साईंनाथाय ते नमः ॥६॥

स्वानुभूत्येकवेद्याय योगिभिः सुसमाधिना।

करणैर्नाविगम्याय साईंनाथाय ते नमः ॥७॥

सदा सर्वात्मना विश्व व्यापिने विश्व योनये।

अनन्यभक्तिगम्याय साईंनाथाय ते नमः॥८॥

अष्टकं साईंनाथस्य भक्त्या पाठं करोति यः।

स भवेन्मुक्त: पापेभ्यः शुद्धसत्त्वः सदाशिवः ॥९॥

कृतमेतत् स्तोत्ररत्नमेकान्ताख्येन साधुना।

न्यस्तं हस्तेषु भक्तानामिदं संसारतारकम् ॥१०॥

श्री साईबाबा - अष्टोत्तरशतनामावली

१. ॐ श्री साईनाथाय नमः

२. ॐ लक्ष्मीनारायणाय नमः

३. ॐ कृष्णरामशिवमारूत्यादिरूपाय नमः

४. ॐ शेषशायिने नमः

५. ॐ गोदावरीतट-शीलधीवासिने नमः

६. ॐ भक्तहृदालयाय नमः

७. ॐ सर्वहृन्निलयाय नमः

८. ॐ भूतावासाय नमः

९. ॐ भूत-भविष्य-भाव-वर्जिताय नमः

१०. ॐ कालातीताय नमः

११. ॐ कालाय नमः

१२. ॐ कालकालाय नमः

१३. ॐ कालदर्पदमनाय नमः

१४. ॐ मृत्युञ्जयाय नमः

१५. ॐ अमत्याय नमः

१६. ॐ अभयप्रदाय नमः

१७. ॐ जीवाधाराय नमः

१८. ॐ सर्वधाराय नमः

१९. ॐ भक्तावनसमर्थाय नमः

२०. ॐ भक्तावनप्रतिज्ञाय नमः

२१. ॐ अन्नवस्त्रदाय नमः

२२. ॐ आरोग्यक्षेमदाय नमः

२३. ॐ धनमांगल्यप्रदाय नमः

२४. ॐ ऋद्धिसिद्धिदाय नमः

२५. ॐ पुत्रभित्रकलत्रबन्धुदाय नमः

२६. ॐ योगक्षेमवहाय नमः

२७. ॐ आपद्बान्धवाय नमः

२८. ॐ मार्गबन्धवे नमः

२९. ॐ भक्तिमुक्तिस्वर्गापवर्गदाय नमः

३०. ॐ प्रियाय नमः

३१. ॐ प्रीतिवर्धनाय नमः

३२. ॐ अन्तर्यामिणे नमः

३३. ॐ सचिदात्मने नमः

३४. ॐ नित्यानंदाय नमः

३५. ॐ परमसुखदाय नमः

३६. ॐ परमेश्वराय नमः

३७. ॐ परब्रह्मणे नमः

३८. ॐ परमात्मने नमः

३९. ॐ ज्ञानस्वरूपिणे नमः

४०. ॐ जगतः पित्रे नमः

४१. ॐ भक्तांनां मातृधातृपितामहाय नमः

४२. ॐ भक्ताभयप्रदाय नमः

४३. ॐ भक्तपराधीनाय नमः

४४. ॐ भक्तानुग्रहकातराय नम:

४५. ॐ शरणागतवत्सलाय नमः

४६. ॐ भक्तिशक्तिप्रदाय नमः

४७. ॐ ज्ञानवैराग्यदाय नमः

४८. ॐ प्रेमप्रदाय नमः

४९. ॐ संशयहृदयदौर्बल्य-पापकर्मवारानाक्षयकराय नमः

५० ॐ हृदयग्रन्थिभेदकाय नमः

५१. ॐ कर्मप्वंसिने नमः

५२ ॐ शुद्धसत्वस्थिताय नमः

५३. ॐ गुणातीतगुणात्मने नमः

५४. ॐ अनन्तकल्याणगुणाय नमः

५५. ॐ अमितपराक्रमाय नमः

५६. ॐ जयिने नमः

५७. ॐ दुर्घर्षाक्षोभ्याय नमः

५८. ॐ अपराजिताय नमः

५९. ॐ त्रिलोकेषु अविघातगतये नम:

६०. ॐ अशक्यरहिताय नमः

६१. ॐ सर्वशक्तिमूर्तये नमः

६२. ॐ सुरूपसुन्दराय नमः

६३. ॐ सुलोचनाय नमः

६४. ॐ बहुरूपविश्वमूर्तये नमः

६५. ॐ अरूपाव्यकाय नम:

६६. ॐ अचिन्त्याय नमः

६७. ॐ सूक्ष्माय नमः

६८. ॐ सर्वन्तर्यामिणे नम:

६९. ॐ मनोवागतीताय नमः

७०. ॐ प्रेममूर्तये नमः

७१. ॐ सुलभदुर्लभाय नमः

७२. ॐ असहायसहायाय नमः

७३. ॐ अनाथनाथदीनबन्धवे नमः

७४. ॐ सर्वभारभृते नम:

७५. ॐ अकनिककर्मसकर्मिणे नमः

७६. ॐ पुण्यश्रवणकीर्तनाय नमः

७७. ॐ तीर्थाय नमः

७८. ॐ वासुदेवाय नमः

७९. ॐ सतां गतये नमः

८०. ॐ सत्परायणाय नमः

८१. ॐ लोकनाथाय नमः

८२. ॐ पावनानघाय नमः

८३. ॐ अमृतांशवे नमः

८४. ॐ भास्करप्रभाय नमः

८५. ॐ ब्रह्मचर्यतपश्चर्यादिसुव्रताय नम:

८६. ॐ सत्यधर्मपरायणाय नमः

८७. ॐ सिद्धेश्वराय नमः

८८. ॐ सिद्धसङ्कल्पाय नमः

८९. ॐ योगेश्वराय नमः

९०. ॐ भगवते नमः

९१. ॐ भक्तवत्सलाय नमः

९२. ॐ त्युरूषाय नमः

९३. ॐ पुरूषोत्तमाय नमः

९४. ॐ सत्यतत्त्वबोधकाय नमः

९५. ॐ कामदिषडवैरिध्वंसिने नमः

९६. ॐ अपेदानन्दानुभवप्रदाय नमः

९७. ॐ समसर्वमतसंमताय नमः

९८. ॐ श्री दक्षिणामूर्तये नमः

९९. ॐ श्री वेङ्कटेशरमणाय नम:

१००. ॐ अग्दुतानन्दच्याय नमः

१०१. ॐ ग्रपन्नार्तिहराय नमः

१०२. ॐ संसारसर्वदुःखक्षयकराय नमः

१०३.ॐ सर्ववित् सर्वतोमुखाय नम:

१०४. ॐ सर्वान्तर्बहि:स्थिताय नमः

१०५. ॐ सर्वमङ्गलकराय नम:

१०६.सर्वाभीष्टसंप्रदाय नमः

१०७. ॐ समरससन्मार्गस्थापनाय नम:

१०८. ॐ श्री समर्थसद्गुरूसाईनाथाय नमः

साई उपासना पद्धति एवं प्रश्नोत्तरी [5]

- *श्री चन्द्रभानु सतपथी* [6]

प्रस्तुत प्रस्तुत लेख में श्री चन्द्रभानु सतपथी जी से बाबा की पूजा और अर्चना से सम्बंधित विभिन्न पुस्तकों एवं पत्रिकाओं में प्रकाशित अनेक प्रश्नोत्तरों को भी संकलित किया गया है।

सद्गुरु यह कभी भी नहीं चाहते हैं कि उनके शिष्य उनसे सहायता प्राप्त करने के लिए सदैव उन्हीं पर निर्भर रहें। वस्तुत: वे अपने शिष्यों को सद्गुणों से युक्त आत्मा-निर्भरशील सत्पुरुष की अवस्था तक विकसित करना चाहते हैं,जो कि उनकी सर्वव्यापक एवं सूक्ष्म गतिविधियों में सहायक हो सकें। इस संबंध में जिस आधारभूत सिद्धांत का वे पालन करते हैं, वह है- एक दीप से अनेक दीप प्रज्वलित करना और वे आशा करते हैं कि आने वाल हर समय में भी चेतना के दीप सदैव प्रज्वलित होते रहें।

---

[5] यह लेख साईंबाबा दर्शन पत्रिका महासमाधि दिवस अंक, 2006 में प्रकाशित हुआ था।

[6] श्री चन्द्रभानु सतपथी जी भारतीय पुलिस सेवा के अवकाश प्राप्त पुलिस महानिदेशक हैं और वे पूर्ण रूप से श्री साई बाबा के महत् कार्यों के प्रति समर्पित हैं। वे निरन्तर फकीर श्री शिरडी के साई बाबा द्वारा प्रदान की गई आध्यात्मिक शिक्षाओं और उनके द्वारा स्थापित जीवन-मूल्यों के प्रचार एवं प्रसार के कार्य में अथक रूप से प्रयत्नशील है। श्री सतपथी जी देश-विदेश के अनेक भक्तों द्वारा श्री साई एवं उनसे सम्बद्ध प्रश्नों का उत्तर देने और लाखों लोगों की आध्यात्मिक समस्याओं का समाधान करने के कार्य में निरंतर संलग्न हैं। उन्होंने अनेक अवसरों पर भी उन्होंने भक्तों को अनेक सन्देश दिए हैं और उनका आध्यात्मिक मार्गदर्शन किया है।

भक्त अपने सद्गुरुओं के विषय में अनेक प्रकार की बातें करते रहते हैं। सद्गुरुओं की महानता उनके व्यक्तित्व, क्रियाकलापों, उनके द्वारा किए गए चमत्कारों, अपने व्यक्तिगत अनुभवों एवं सद्गुरुओं से संबंधित अन्य भक्तों के अनुभवों और सामूहिक क्रियाकलापों आदि के बारे में वे कहते नहीं थकते। विशेष रूप से जब श्री साईंनाथ महाराज का उल्लेख होता है तो भक्त उनसे संबंधित अपने स्वप्नों के विषय में अधिक बात करते हैं। साथ ही वे बाबा से संबंधित अपने व्यक्तिगत अनुभवों-जिन्हें वे चमत्कार कहते हैं- की चर्चा करते हैं। वे बाबा के प्रति अपने भावात्मक लगाव का वर्णन करते हैं और साथ ही बाबा के साथ उनका जो भावात्मक संबंध है, इसके विषय में भी वे बतलाते हैं। संक्षेप में, वे उनका अनुभव भगवान् के रूप से करते हैं, जिन्हें इष्ट देवता भी कह सकते हैं। उनमें से कुछ लोग इसके साथ ही अनेक इष्ट देवताओं को भी भगवान के रूप में पूजन करते हैं। इसीलिए उन्हें केवल एक ही के ऊपर अपना ध्यान केंद्रित करने में कठिनाई होती है। सब धर्म यही बात कहते हैं कि वह मूल परमात्मा सभी इष्ट देवताओं के परे है। कोई भी इष्ट देवता- चाहे उसे किसी भी नाम से पुकारा जाए- वह 'सगुण' (अर्थात् कुछ विशिष्ट गुणों एवं शक्तियों से युक्त) और 'साकार' (अर्थात् जिस आकार को मनुष्य अपनी सामान्य बुद्धि सीमा के अनुरूप धारण कर सके) है। ईश्वर सूक्ष्म रूप में 'निर्गुण' (सभी सीमित गुणों एवं शक्तियों के परे) एवं 'निराकार' (निश्चित रूपाकृति के परे) अवस्था में है। इस प्रकार 'निर्गुण-निराकार' का अर्थ है- ईश्वर, परम सत्य अथवा ब्रह्म के मूल तत्व या सार (ईश्वरता) को उनकी संपूर्ण सृष्टि में देखना या अनुभव करना। यानी कि भक्त द्वारा स्वयं में तथा अपने चारों ओर की संपूर्ण व्यक्त और अव्यक्त सृष्टि में ईश्वरता को देखना और अनुभव करना है।

इन धारणाओं के आधार पर सभी मूर्तियाँ या चित्र, समाधियाँ नाम-जाप, आरतियाँ, मंत्र, चरण-पादुका आदि केवल ईश्वर के प्रतीक है और निश्चित ही 'रूप' वह 'आदि ब्रह्म' नहीं है। सामान्यत: इन प्रतीकों की उपासना इसलिए की जाती है और इनका

ध्यान किया जाता है क्योंकि इन रूपों को मनुष्य अपनी सीमित बुद्धि द्वारा सरलता से धारण कर सकता है। अब प्रश्न यह उठता है कि क्या मनुष्य की बुद्धि इस प्रकार सीमाओं के अन्दर रहे? अथवा क्या यह ज़रूरी है कि मनुष्य अपने लिए ऐसा ही रास्ता चुने, जो उसको सीमित ही रखे? अगर कोई मार्ग या धर्म ऐसा दृष्टिकोण लेकर चलता है, तो वह स्वयं सीमित है। हिन्दू धर्म में ऐसी बहुत सी पद्धतियाँ हैं, जिनको अपनाने पर भक्त साकार (सीमित रूप) पूजा-विधि से उठकर निर्गुण (अर्थात् रूपाकार-रहित) उपासना की दिशा में प्रगति कर सकता है।

धर्म का अर्थ दोहरा है- उसमें पूजा के विधि-विधान भी हैं और अध्यात्म भी है। जब तक कोई विधि-विधानों की सीमा में ही रह जाए, तब तक उसके द्वारा अध्यात्मवाद के वास्तविक जगत में प्रवेश कर पाना कठिन है। अध्यात्मवाद का अर्थ है कि अंतरात्मा की सच्ची आवाज को सुनना और उसी के अनुसार आचरण करना। सामान्यतया अंतरात्मा का अर्थ है- हमारे भीतर स्थित वह आत्मा जो कि उस परमत्त्व ईश्वर का अंश है। उस परमतत्त्व ईश्वर का अंश है- यह दृश्यमान एवं अदृश्यमान जगत, चेतन प्राणी एवं जड पदार्थ और छोटे से छोटे कण से लेकर बड़े से बड़े नक्षत्र। इसलिये अनिवार्यतः अध्यात्मवाद का लक्ष्य जीव की चेतना का विस्तार करना है और जीवात्मा को अपनी सीमित देहबद्ध चेतना के संकीर्ण दायरे से निकाल कर अनन्त ब्रह्माण्ड-व्यापी चेतना स अभिज्ञता प्राप्त कराना है। पूजा, अर्चना, यज्ञादि अनुष्ठान या विधिना यदि किसी व्यक्ति की चेतना का विस्तार या उसके मानसिक दायर का विकास नहीं कर पाते तो यह निश्चित ही अध्यात्मवाद नहीं है।

सामान्यतः अध्यात्म का वास्तविक अर्थ न समझ पाने के कारण अधिकांश भक्त अपना सम्पूर्ण जीवन पूजा के कुछ निश्चित विधि-विधान करने में बिता देते हैं परन्तु फिर भी वे आध्यात्मिक उन्नति को प्राप्त नहीं कर पात ह ईश्वर की अनेक रूपों में से उनके किसी एक रूप और फिर उनक सभा उनक निराकार रूप तक चेतना को

ले जाना ही अध्यात्मवाद का मूल मंत्र है। ईश्वर की अनेक रूपों में (जैसे विभिन्न देवी-देवताओं के रूप में) उपासना से किसी एक निश्चित रूप में चित एकाप नहीं होता। चूंकि ये देवी देवता प्रकृति की विभिन्न भूमिकाओं के प्रतीक है, उनके कार्य और उनकी शक्तियाँ भी अलग अलग होती है उदाहरण के तौर पर श्री गणपति विष-निवारण के लिए है, श्री दुर्गा शत्रु से रक्षा के लिए हैं, श्री लक्ष्मी समृद्धि के लिए हैं या श्री हनुमान शौर्य के प्रतीक हैं। ईश्वर के इन विभिन्न रूपों की उपासना करने वाला कोई व्यक्ति भले ही यह समझता है कि निराकार उपासना श्रेष्ठतर है वह भय को कारण इन सगुण मूर्ति आदि की उपासना को छोड़ नहीं पाता। निःसंदेह ये चारों देवता उस एक (परमात्मा) के ही भिन्न भिन्न कार्य शक्तियों गे युक्त भिन्न-भिन्न रूप है, पर इस स्थिति में भक्त फिर किस रूप पर अपना ध्यान केन्द्रित करे? ईश्वर के सूक्ष्म एवं अलौकिक अनुभव के लिए एकाग्रचित्त होना अत्यावश्यक है। फिर ईश्वर के अनेक रूपों की उपासना करने वाला भक्त एक ही रूप में एकाग्रचित्त कैसे हो सकता है? ऐसी स्थिति में भक्त को दो रास्तों में से किसी एक को चुनना होगा। या तो वह इन देवी-देवताओं की उपासना के परे जाकर उन परम निर्गुण निराकार की उपासना करे या फिर वह ज्ञान-मार्ग द्वारा इन सीमित प्रकार को रूपों के माध्यम से निराकार पूजा तक पहुँचे। हर युग में चाहे जो भी धर्म हो सभी आध्यात्मिक साधक इसी प्रक्रिया से गुजरे है, जिसमें उन्होंने साकार से उठकर निराकार ईश्वर के प्रति अपना ध्यान केन्द्रित किया है या साकार मूर्ति आदि के माध्यम से ईश्वर की निराकार सत्ता का अनुभव किया है।

अपने शिष्यों की चेतना के स्तर को देखते हुए सद्गुरुओं ने सदैव अपने शिष्यों को इस प्रकार की शिक्षा दी है। जिन भक्तों ने उनका पालन करते हुए ईश्वर के अलौकिक अथवा सूक्ष्म स्वरूप का अनुभव करने का प्रयल किया, वे आवश्यक रूप से अन्य भवनों की तुलना में अधिक क्षिप्र गति से आध्यात्मिक प्रगति कर सके। जो भक्त

ईश्वर की केवल साकार रूप से उपासना करते रहे, उनको प्रगति में ज्यादा समय लग गया।

इस प्रकार बाबा ने श्री साईं सच्चरित्र' में स्पष्ट रूप से यह कहा है कि उनकी उपासना की सर्वोत्तम पद्धति यह है कि उसका अनुभव एक निराकार सर्वव्यापी सत्ता/चेतना यो रूप में किया जाए और यदि यह सभव न हो सके तो उनकी सगुण रूप में उपासना की जाए इस कारण यह आवश्यक है कि बाबा की सगुण-साकार रूप में उपासना करने वाले भक्त उन्हें क्रमश: निराकार रूप में अनुभव करने का प्रयत्न करें। पर यह मूल प्रश्न है कि जब एक ही समय में बहुत से देवी-देवता आदि के रूप पर ध्यान दिया जाए तो ध्यान कैसे केन्द्रित हो? और किस प्रकार उसे एकाग्रचित्त स्थिति में लाया जाए? क्या सद्गुरु के ही रूप पर ध्यान केन्द्रित करना पर्याप्त नहीं है? यदि हमें सद्गुरु के स्वरूप को देखना, तो हमें हर जीवंत वस्तु में, चाहे वह आदमी हो, प्राणी हो अथवा प्रकृति हो - सभी में उन्हें देखना चाहिए।

प्रश्नोत्तरी

मूर्ती पूजा या प्रतीक-पूजा का क्या महत्व है?

परमेश्वर, परब्रह्म एवं भगवान की परिकल्पना आध्यात्मिक अनुभूति-प्राप्त संत एवं महात्माओं द्वारा परम व्यापक रूप से की गयी है। साथ ही उन्होंने ईश्वरीय सत्ता को सूक्ष्मातिसूक्ष्म रूप में भी अनुभव किया है। जिन्होंने कठिन आध्यात्मिक मार्ग में चलते हुए और गुरु-कृपा द्वारा ईश्वर के चैतन्य-रूपी स्वरूप का अनुभव कर लिया, उनके लिए मूर्ती या प्रतीक- पूजा की आवश्यकता नहीं है। प्रतीकों की पूजा, जैसे

कि मूर्ति, फ़ोटो, चित्र आदि की पूजा, भक्तगण प्रारम्भिक अवस्था में करते हैं। यह इसलिए है कि जो कठिन योग-साधना द्वारा अपने चैतन्य को विश्व-भुवन में व्याप्त करने की क्षमता नहीं रखते हैं, उस व्यापक रूप की एक प्रतीक-रूप में पूजा कर सकते हैं। समष्टि को व्यष्टि रूप से, बृहत् को क्षेत्र रूप से प्रस्तुत करने के लिए सांकेतिक उपादानों, रूपक आदि का प्रयोग किया जाता है, जैसा कि साहित्य में होता है। इनके द्वारा उस मूलस्वरूप को समझने में सहायता मिलती है। पर साकार प्रतीक यानी मूर्ति की पूजा करते-करते निराकार रूप तक पहुँचा जा सकता है।

सद्गुरु की पूजा को क्या सगुण-साकार पूजा कहेंगे?

जी हाँ। सद्गुरु का अर्थ है महत ईश्वरीय चेतना निवास कर रही है। वह चेतना-शक्ति चाहे तो एक शरीर को छोड़कर दूसरे शरीर को आधार बना सकती है। जैसे कि आदि शंकराचार्य ने परकाया प्रवेश किया था। सामान्य आदमी की चेतना-शक्ति इतने उच्चतर या सूक्ष्म स्तर तक नहीं पहुँची है कि वह जब चाहे अपनी चेतना-शक्ति को अन्य शरीर में प्रवेश करा सके। वस्तुतः: भक्त पहले सद्गुरु के शारीरिक रूप की पूजा करना शुरू करते हैं। सद्गुरु की पूजा वे पहले इसीलिए करते हैं कि उनकी कृपा, क्षमा, शांति आदि गुणों से भक्त अभिभूत हो जाता है। इसी कारण शरीर-धारण के लिए या एक शरीर में निवास करने के कारण अथवा यह कहें कि शरीर-रूपी एक क्षेत्र में निवास करने के कारण वे साकार होते हैं और उन ईश्वरीय गुणों से विभूषित होने के कारण श्री गुरु सगुण-साकार हैं। अगर मूर्ति भी सगुण-साकार है और सद्गुरु भी सगुण-साकार है.

फिर किसकी पूजा करना बेहतर होगा?

मूर्ति सगुण साकार पार्थिव रूप है, जिसमें ईश्वरीय चेतना को जागृत करना पड़ता है। अर्थात् प्रथमतः यह मात्र एक चेतनाहीन पार्थिव रूप है। उसके बाद मंत्र-शक्ति द्वारा इसमें प्राणशक्ति का संचार किया जाता है। पर सगुण शरीर बनने से पहले उस चेतना-शक्ति का और शक्ति नामक वह चेतना जागृत था और बाद में उसने एक पार्थिव शरीर को आधार बनाया। यह सिर्फ शरीर नहीं, मूर्ति या फोटो आदि को भी आधार बना सक को आधार बनाया। यह शकित संत ज्ञानेश्वर ने भैसे की आधार बनाकर दर्शन पढ़वाया और श्री दत्तात्रेय ने कुत्तों के माध्यम से वेद पढ़ाया। इसीलिए सगुण-साकार देही श्रीगुरु की तरह प्राण-संचार करने की आवश्यकता नहीं है। वे स्वयं सिद्ध हैं। कार श्रीगुरु में मूर्ति अपनी शक्ति जिसको भी चाहें दे सकते हैं उनकी महानतम शक्तिह शक्ति। इसलिए देही सद्गुरु की पूजा सर्वोत्कृष्ट है।

जब बाबा फकीर थे तो उनकी राजाधिराज के रूप में जाती है?

बाबा की राजाधिराज के रूप में पूजा यह भक्तों का भाव है. राजा का कार्य है- प्रजा का पालन। भक्त दास-भाव से उन इर प्रकार से सेवा करता है और यह निवेदन करता है कि " हे बाबा। ह आपको राजाधिराज बनाया है और आपकी सेवा कर रहे हैं। कृपा कर मेरा पालन करें और हमारी समस्याओं से हमें मुक्त करें। आपके अचिन्त्य दिव्य शक्तियाँ हैं। इसलिए आप ही हमारी रक्षा कर सकते हैं. सद्गुरु का किसी भी रूप में पूजन वास्तव में उस ईश्वरीय चेतन शक्ति की पूजा है जो उस मानव रूप में अभिव्यक्त हुई है.

क्या गुरु की मूर्ति की पूजा या फोटो की पूजा करना विधि-सम्मत है ?

जी हाँ. जब तक श्रीगुरु शरीर में हैं, उनके शरीर की पूजा करना विध (विधि-सम्मत) है। जब की पूजा की जा सकती है। अन्य देवी-देवताओं की पूजा निर्धा पूजा-विधि द्वारा की जाती है और आवाहन में उनके सीमित गुण औ शक्ति ही आकर्षित होते हैं। पर सद्गुरु गुणातीत होते हुए भी सगुण रूप से पूजा पा सकते हैं, उनकी किसी भी देवी-देवता के रूप में पूजा की जा सकती हैं। इस परम्परा से गुरु की समाधि, क्षेत्र और धाम की भी लोग पूजा करते है। श्री साईंनाथ महाराज ने विभिन्न भक्तों को उनके भाव और इच्छा के अनुरूप राम, हनुमान, विट्ठल आदि रूपों में दर्शन दिये थे। सच तो यह है कि स्वर्ग के इंद्र आदि देवी-देवता सीमित शक्तियों से अनुप्राणित हैं, जबकि सद्गुरु व्यापक एवं असीमित-शक्तियों से युक्त है।

बाबा की मूर्ति-स्थापना बाबा की स्थापना किस दिशा में करनी चाहिए?

बाबा को किसी भी दिशा में स्थापित करके पूजा की जा सकती है. शिरडी में द्वारकामाई की दिशा तो दक्षिण में है, जिसे यम की दिशा मानते हैं। फिर भी उत्तर या उत्तर-पूर्व दिशा सर्वश्रेष्ठ है। बाबा से प्यार ही उनका पूजन एक आम इंसान को बाबा की पूजा कब और किस विधि के अनुसार करनी चाहिए। ईश्वर की पूजा इसलिए की जाती है कि हम ईश्वर के समीप जा सकें क्योंकि हम ईश्वर के एकरूप तो हैं और ईश्वर हमारे समीप भी हैं, हमारे अन्दर है. पर निकट का वह ईश्वर जिसे हम देख नहीं पा रहे हैं उनको ज्यादा और धीरे-धीरे एक सम्पूर्ण एवं प्रत्यक्ष रूप से अनुभव करें। पूजा और विधि एक मार्ग है उन तक पहुँचने के लिए, ध्येय नहीं। ध्येय को निश्चित कर अपने अदर जागृत ज्योति को सद्गुरु या ईश्वर की ज्योति से जोड़ने का प्रयत्न करें। जब तक हमारे शरीर एवं मन का आकर्षण पूरी तरह नहीं कट जायेगा, जब तक वह हमको छोड़ेगा नहीं, तब तक उस ज्योति की पूरी किरण नहीं आयगा। ज्योति की उस किरण पर जैसे परदे पड़े हुए हैं - मन, शरीर, अहंकार आदि

का इसलिए पूजा जो भी हो का पाठ किया जाए, चाहे कुछ भी किया जाए, वह सब हमें इसलिए करना चाहिए कि हमें बाबा ही ही हमारे ध्येय हैं ना कि पूजा-विधि। कई व्यक्ति कोई भी प्रचलित सामाजिक पूजा विधि के बिना भी ईश्वर को पा गए हैं। बाबा को प्यार करना हो बाबा की पूजा है।

अगर कोई ज्यादा पूजा करना चाहे तो घर में सुबह पूजा करनी अच्छी है । सबह पूजा आरती के साथ करें, बाबा को प्रसाद, फल पत्ते आदि पूर्ण श्रद्धा से चढ़ाएँ। रात को सोने करके विभूति लगाकर और खाकर सो जाएँ। यह पारंपरिक पूजा है।

क्या सद्गुरु की पूजा अन्य देवताओं की तरह करनी चाहिए।

सतगुरु की अन्य देवताओं की तरह पूजा करने की आवश्यकता नहीं है। क्योंकि तब निराकार ईश्वर भाव कहाँ से आएगा कि सद्गुरु सगुण ब्रह्म या ईश्वर हैं। भाव-हीन पूजा का कछ मायने नहीं है। अपने भीतर जो भाव हैं, उसी में पूजा करें। पिता लिए जो पिता-भाव है, माता के लिए जो माता-भाव है, जो भी भाव आप में प्रबल है, उसी भाव से सद्गुरु को पुकारिए। सद्गुरु में सभी भावों का समन्वय होता है। अकिंचन भाव की श्रेष्ठता पहले बाबा की इसी प्रकार पूजा को जानते नहीं हो, उन्हें देखा नहीं है, समझा नहीं है तो

सद्गुरु की उपासना किस भाव से करनी चाहिए?

अकिंचन भाव से। अकिंचन भाव से ही सद्गुरु आकर्षित होते हैं। तभी सद्गुरु की कृपा प्राप्त होती है। इसीलिए उन्हें दीनबंधु कहा गया है। उनकी उपासना दास, बन्धु, सखा-भाव आदि से भी हो सकती है। किन्तु दास-भाव श्रेष्ठतम होता है क्योंकि

इसमें अकिंचन भाव होता है। जिसमें जितना ही अकिंचन भाव होगा, वह उतना ही दीन एवं अहंकार-रहित होगा और फिर गुरु की कृपा उसी रूप में उसे प्राप्त होती है।

स्वयं में संपूर्ण क्या बाबा की पूजा करने के बाद किसी और की पूजा करने की आवश्यकता है?

नहीं, क्योंकि श्री साईंनाथ पूर्ण ईश्वरीय सत्ता को प्राप्त कर चुके थे। बाबा ने कहा था - मैं ही समस्त प्राणियों का प्रभ और घट-घट में व्याप्त हू। मेरे ही रोम में समस्त जड व चेतन प्राणी समाए हुए हैं। मैं ही समस्त ब्रह्मांड का पत्रणकर्ता व संचालक हूँ। मैं ही उत्पत्ति, स्थिति व संहारकर्ता हूँ। मेरी भक्ति करने वालों को कोई हानि नहीं पहुंचा सकता। मेरे ध्यान की उपेक्षा करने वाला माया के पास में फँस जाता है। समस्त जतु, चीटियों तथा दृश्यमान परिवर्तमान और स्थायी विश्व मेरे ही स्वरूप हैं।

बाबा की पूजा के अतिरिक्त किसी अन्य की पूजा क्यों आवश्यक नहीं है?

इस प्रश्न का उत्तर हर व्यक्ति के आध्यात्मिक स्तर पर निर्भर करता है। श्री साईं सच्चरित्र' जिसमें बाबा के द्वारा दिए गए उपदेशों को याद अच्छी तरह पढ़ा जाए तो यह पता चलेगा कि बाबा ने विभिन्न प्रकार क व्यक्तियों को भिन्न-भिन्न प्रकार का रास्ता दिखाया। बाबा ने यह कहा है -"ईश्वर के पास पहुँचने के अनेक पंथ हैं। यहाँ से भी एक मार्ग है। जब मेघा मंदिर में शिवलिंग की पूजा नहीं करके आया, तो बाबा उससे कहा कि उसने वहाँ जाकर पूजा क्यों नहीं की। बहुत से भक्त देवी-देवताओं की पूजा करते थे जैसे सब नदियाँ समुद्र में जाती हैं, उसी द्वार से कोई भी व्यक्ति सद्गुरु की शरण में जाकर किसी भी देवी-देवता पूजा करे आखिर में उन्हीं में विलय होगा। जन्मों संस्कार से आए उत्पन्न संस्कारों के कारण कुछ भक्त अन्य

देवी-देवताओं के प्रति श्रद्धा प्रदर्शित करते रहते हैं यह गलत नहीं है, पर यह उद्देश्य नहीं है। ये केवल मार्ग हैं। वेदों एवं धर्मशास्त्रों के अनुसार भगवान् की पूजा होती है किंतु सद्गुरु की सभी रूपों एवं गुणों चाहे वे किसी भी रूप में हों जो बाबा के प्रति अनन्य आश्रित भाव रखता है, वह अवश्य ही समस्त देवी-देवताओं को अगर इच्छा भी है तो उन्हीं के अंदर देखेगा। बाबा इसके बारे में पर्याप्त संकेत दे चुके हैं। [7] अतएव अवतारों की या विग्रह-पूजा करने की कोई भी आवश्यकता नहीं है।

बाबा की पूजा करना और गायत्री-माता की मूर्ति के समक्ष गायत्री-मंत्र का जप करना, क्या आध्यात्मिक दृष्टि से उचित है?

मैंने पहले भी कहा है कि बाबा किसी भी रूप में पूजित हैं। शिरडी में बाबा के सामने लोग गायत्री-मंत्र का जप करते थे। बाबा के सामने किसी भी मंत्र का जप कर सकते हैं।

क्या बाबा का भोग लगाने के लिए अलग से कुछ तैयार करना आवश्यक है? भोग के लिए क्या कोई विशेष पदार्थ उचित है?

अपने खाने के लिए घर में जो कुछ भी बने, बाबा को उसी का भोग लगाना चाहिए और लोगों में बाँटना चाहिए। शुद्ध भावों से बाबा को जो कुछ भी अर्पित किया जाएगा, वह उन्हें स्वीकार्य होगा यह कहना कि मांसाहारी भोजन भोग में चढ़ाना उचित नहीं है, तो इसका तात्पर्य क्या यह है कि मुसलमान लोग ईश्वर को भोग

---

[7] देखें: श्री साई सच्चरित्र, अध्याय 44, पृष्ठ संख्या 266-67

स्वरूप जो मांसाहारी भोजन चढ़ात है। वह ईश्वर को स्वीकार्य नहीं होता? ईसा मसीह ने अपने जीवन के अंतिम भोज में निरामिष भोजन ग्रहण किया था वह तो केवल हमारे भाव है, जो बाबा तक पहुंचते हैं।

बाबा की पूजा विधि घर में बाबा की पूजा किस विधि से करनी चाहिए?

घर में की जाने वाली बाबा की पूजा और मंदिर में की जानेवाली पूजा में मूलभूत अंतर है। घर में रखी मूर्ति अथवा फोटो की प्राण-प्रतिष्ठा नहीं है है। अत: किसी भी प्रकार से बाबा का पूजन किया जा सकता है । पूजा विधि को सरल बनाना आवश्यक है। सभी वाह्य अनुष्ठान, कर्मकाण आदि कृत्रिम है। वास्तविक पूजा तो सद्गुरु में अखंड विश्वास रखते हुए विभूति से भावों के द्वारा कहीं भी हो सकती है। यदि हम किसी आर्यवश घर से बाहर है, तो वहा भी हम बाबा की पूजा उसी प्रकार का सकते हैं, जिस प्रकार घर में करते हैं। घर में पूजा के लिए किसी को भी यह कार्य सौंपा जा सकता है। बाबा किसी भी धर्म, जात-पात, ऊँच-नीच, छोटे-बड़े, धनी-निर्धन, आदि के भेद से परे है। वेदों में कहा गया है कि सद्गुरु-रूप में सभी इष्ट समाहित हैं। अत: सभी इष्टों को छोड़कर भी यदि सद्गुरु की पूजा की जाएगी तो उसमें कोई दोष नहीं है। सिख भक्तों ने अपने गुरुओं के प्रति सहर्ष अपने प्राण न्यौछावर कर दिए क्योंकि उन्हें विश्वास था कि गुरु अनश्वर हैं और सदा उनके साथ हैं सद्गुरु के प्रति अगाध विश्वास की स्थिरता परम आवश्यक है।

मानस-पूजा क्या है? क्या हम बाबा की मानस-पूजा कर सकते हैं?

मानस-पूजा का वास्तविक अर्थ यह है कि बाबा की मूर्ति के समक्ष बैठकर समस्त पूजा-पद्धति को मानसिक प्रक्रिया द्वारा पूर्ण करना। जैसा कि हम श्री साईंनाथ की मूर्ति के समक्ष करते हैं।

अक्सर यह देखा गया है कि लोग पूजा-पाठ के विधि-विधान करते हैं। यदि किसी कारण से वे नहीं हो पाते या कोई कमी रह जाती है न उनमें एक प्रकार का अपराध-भाव पैदा हो जाता है। इस सम्बन्ध में आप क्या कहना चाहेंगे?

मैं तो सदा यही कहता हूँ कि किसी चीज को दायरा मत बनाइए। चाहे भक्ति का दायरा हो, चाहे उसके विधि-विधानों का दायरा हो। ये सब बन्धन हैं। अगर भाव होगा तो हम कहीं भी पूजा कर लेंगे। ईश्वर तो करोड़ों-करोड़ों रूपों में हैं। क्या वे हमारे मन के भाव को ग्रहण नहीं करेंगे? सबसे अच्छी तो मानस-पूजा है। इसके लिए न मन्दिर जाना पड़ता है और न ही बाह्य रूप से किसी परिपाटी की आवश्यकता है।

साईं ! तू अपनी चिलम से
थोड़ी-सी आग दे दे

मैं तेरी

अगरबत्ती हूँ

और तेरी दरगाह

पर मुझे

एक घड़ी जलना है...

- ***अमृता प्रीतम***